दादाजी श्री. टी. एल्. वास्वानी

वास्वानी वचनामृत

लेखक

साधु टी. एल्. वास्वानी

(Thus Spake Dadaji का अविकल अनुवाद)

卐

प्रस्तावना

दादा जे. पी. वास्वानी

卐

अनुवादक

लालजी उपाध्ये

*

मीरा प्रकाशन

१०, साधु वास्वानी पथ, पुणे ४११ ००१ (भारत)

प्रकाशक :

श्री गंगाराम साजनदास,

मीरा प्रकाशन,

१०, साधु वास्वानी पथ,

पुणे ४११ ००१ (भारत)

*

प्रथम संस्करण :

दिनांक २५ नवंबर १९७७

*

मुद्रक :

लेफ्ट. कर्नल वि. वा. जोशी,

सकाळ प्रिंटिंग प्रेस,

५९५ बुधवार पेठ,

पुणे ४११ ००२

*

मूल्य ५० पैसे

प्रस्तावना

साधु टी. एल्. वास्वानीजी दुनिया के बहुतेरे मुल्कों के निवासी करोड़ों व्यक्तियों के परमप्रिय एवं श्रद्धेय दादाजी थे । अर्वाचीन भारत के महर्षि, महान् चिंतक, दार्शनिक, द्रष्टा, दीन-दुखियों के संगी-साथी, एकांत भागवत पंथ के पथिक और रहस्य-मर्मज्ञ महात्मा के रूप में दुनियाभर में आप सुविख्यात रहे । दादाजी के प्रचुर, समृद्ध साहित्य भांडार से संग्रहित कतिपय सूक्तियों का लघु संकलन प्रस्तुत है ।

विभिन्न मानव-वंशों, विविध धर्म-संप्रदायों और बहुत-से देशों के लोग दादाजी को भाई मानते थे । बे-सहारा लोगों, पशुओं और पक्षियों, पेड़-पौधों, पुष्पों, निर्झरों और सितारों, एवं सारी जड़, चेतन सृष्टि के आप सखा थे ।

दादाजी के वचन सदाचार के मौलिक सिद्धांतों से अनुप्राणित हैं । कार्यान्वय के प्रयास की प्रक्रिया में उन का सही मूल्यांकन किया जा सकेगा । अंतःकरण में प्रेरणादायी विचार-बीज बो कर सदाचार के मधुर फल प्राप्त करने में उन की यथार्थ महत्ता निहित है ।

दादाजी की वाणी में प्रसाद और मधुरिमा भरी हुई है। कोयल के सुकोमल, करुणाभरे आलाप से आँखों में आंसू उमड़ उठते हैं। उसी प्रकार दादाजी के वचन से हृदय पुलकित हो जाता है। मुझे विश्वास है कि दादाजी की सादगीभरी, लुभावनी सूक्तियां एकांत भागवत पंथ के पथिकों को अभिभूत किया करेंगी। आप विश्व एवं मानव को दिव्य आलोक में देख पाते थे। गहन हृदय गव्हर की सच्ची लगन से आपकी वाणी मुखरित होती थी। आपकी कही बातें सुनते हुए हम लोग मानो अपनी चेतना से बाहर खींचकर दिव्याकाश में ऊंची उड़ानें भरकर अज्ञेय, दुर्गम मुल्कों में विचरण करते थे।

दादाजी ने अंग्रेजी और अपनी मातृभाषा सिंधी में प्रेरणा-दायी, गद्य-काव्य की-सी शैली में प्रचुर साहित्य सृजन किया। आप के साहित्य के जरिये पाठकों के समक्ष अज्ञात दिव्य विश्व प्रकट हो जाता है। गहन, अद्‌भुत, आश्चर्यकारी सत्य के विभिन्न आयाम सादगीभरे सौंदर्य के साथ अभिव्यक्त हो कर पाठकों के अंतरंग को छू लेते हैं। दादाजी की वाणी में हृदय के भीतर गहरे पैठ जाने की अद्‌भुत क्षमता है। दुनिया भर के बहुत-से लोगों ने स्वीकार किया है कि दादाजी का साहित्य पढ़ कर तथा वाणी सुन कर उन की चेतना की गहराई और विस्तार में काफ़ी वृद्धि हुई। दादाजी की वाणी मुझे बराबर

सत्य-शिव-सौंदर्य के अभिनव विश्व की ओर खींच लेती रही। इस से मेरा जीवन अधिक समृद्ध, पुनीत और उदात्त हो गया। मुझे विश्वास है कि मेरा देहान्त भी इसी प्रकार अधिक पावन, परिष्कृत होगा।

दादाजी की मन:शक्ति प्रचंड थी, तथा जीवन के अन्यान्य क्षेत्रों के विषय में ज्ञान-भांडार विपुल और वैचित्र्यपूर्ण था। तथापि आप का सही कार्यक्षेत्र दिव्य चैतन्य की सिद्धि रहा। लोगों के बीच रहने के बावजूद आप मानो सब से अलग, एकांत में रहते थे। दिव्य चैतन्य के विश्व में आप निवास करते थे, जिस से आप के व्यक्तित्व में आध्यात्मिक प्रभाव की अखंड धारा बहती रहती थी। समीपवर्ती लोगों पर इस का अद्भुत गहरा असर होता था। कमरे में या सभागृह में आप का प्रवेश होते ही सब के अंतरंग पर गहरी शांति छा जाती थी। आप बातें करते तो दर्शक आप के शब्दों का सहारा पा कर ऊंचे धरातल पर मनोवैज्ञानिक विश्व में ऊपर उठते थे।

आयर्लैंड के सुविख्यात कवि डॉ. कजिन्स ने भारत में अपने जीवन के बहुत-से वर्ष गुजारे। 'भारत का आधुनिक रहस्य-दर्शी महात्मा, नवयुग का संदेश-वाहक दूत, दिव्य चैतन्य के गहन सत्य का अनुसंधाता,' आदि जैसे अभिधानों द्वारा वे दादाजी के प्रति सम्मान प्रकट करते थे। अमेरिका की एक विदुषी

महिला ने कहा था, " पश्चिम में तीन भारतीयों के नाम सर्वाधिक सुविख्यात हैं । वे हैं, महात्मा गांधी, गुरुदेव रवींद्रनाथ टागोर, और साधु टी. एल्. वास्वानी ।"

दादाजी ने प्रारंभ में ' गुप्त प्रभु के बीच लुप्त जीवन ' कई साल तक बिताया । सिंध प्रदेश में आप का जन्म नगर हैदराबाद में ता. २५ नवंबर १८७९ के दिन हुआ था । सिंध की पावन भूमि में कई संत-कवि, महात्मा, भक्त पैदा हुए । दादाजी तीस वर्ष की आयु में भारत के प्रतिनिधि के नाते बर्लिन में विश्व धर्म परिषद – वेल्ट काँग्रेस – में उपस्थित रहे । काँग्रेस तथा युरोप के अन्यान्य स्थानों में आप के दिए भाषणों के फलस्वरूप भारतीय धर्म और दर्शन के बारे में गहरी जिज्ञासा पैदा हुई । भारत के दीन-दुखियों की सहायता एवं सेवा के आयोजन में युरोप के कई उदार व्यक्तियों ने दादाजी से दृढ संपर्क स्थापित किया ।

प्राय: बचपन से ही दादाजी के हृदय में भगवान के प्रति भक्तिभाव कूट कूट कर भरा हुआ था । भगवान की भक्ति तथा उस की दुखी, बेसहारा संतान की सेवा की लगन ने आप को फकीर का जीवन अपनाने को प्रेरित किया था । आप चाहते थे कि अपना निजी परिवार या जायदाद कतई न रहे । प्रभु के एक औजार के रूप में जीवन बिताऊं और उत्पीडितों

के हृदय तक प्रभु का संदेश पहुंचा कर उन्हें सांत्वना दिला दूं ।

तथापि कई वर्ष आप ने ऐहिक और लौकिक व्यवहार के जीवन में बिता दिए । कई महाविद्यालयों के प्राचार्य पद का कार्यभार आप संभालते रहे । आप को सर्वत्र नौजवानों से प्यार और सम्मान मिलता रहा । ऐहिक वैभव और उत्कर्ष का विशाल क्षेत्र आप के सामने खुला पड़ा था । लेकिन दौलत और ऐयाशी आप का मकसद नहीं था ।

आप की उम्र चालीस साल की थी जब आप की माताजी चल बसीं । इस से आप के दिल को भारी चोट लगी और आपने महाविद्यालय के काम से इस्तीफा दे दिया । विनीत देशसेवक एवं ऋषि-मुनियों का अनुगामी होने के उद्देश्य से आपने अधिकार पदों से छुट्टी पा ली । उन दिनों महात्मा गांधीजी के नेतृत्व में स्वाधीनता के लिए सत्याग्रह आंदोलन जारी था । दादाजी म. गांधीजी के प्रारंभ के प्रबलतम समर्थकों और निकटतम साथियों में से थे । गांधीजी की अंग्रेजी साप्ताहिक पत्रिका यंग इंडिया के प्रथम अंक के पहले पृष्ठ पर छपा लेख दादाजी का लिखा था । वतन की आजादी हासिल करने के लिये कुरबानी की प्रेरणा दिलानेवाली कई अंग्रेजी पुस्तिकाएँ दादाजी ने नौजवानों को लक्ष्य कर लिखीं । भारत का नव

जागरण, गुलाम हिंदुस्तान, हिंदुस्तान के बहादुर, एशिया का अंतरंग, भविष्य के निर्माता, स्वाधीनता के पुजारी, मेरी मातृभूमि आदि शीर्षकों से उन पुस्तिकाओं के आशय की कल्पना की जा सकती है ।

इस के उपरांत दादाजी शिक्षा, जन-जागरण तथा देश के नव-निर्माण के रचनात्मक कार्य में संपूर्णतः जुट गए । इस बात पर बराबर बल देते हुए कि नागरिकों का चरित्र-निर्माण, राष्ट्र-निर्माण कार्यक्रम का अनिवार्य अंग है, आपने स्थान स्थान पर युवक केंद्र संगठित किए । राजपुर में आप ने शक्ति-आश्रम खोला ।

भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने पुणे में आयोजित आम सभा में भाषण देते हुए कहा, " साधु वास्वानीजी दिव्य पथ के यात्री थे । देशभर के नौजवानों में जागरण और वैचारिक संतुलन लाने के कार्य के लिए आपने अपने को समर्पित किया था । आपने एक नया वायुमंडल, नयी हवा पैदा की । "

सिंध प्रदेश में ' मीरा शिक्षा अभियान ' की नींव सन १९३३ में दादाजी ने डाली, जिस के अंतर्गत एक स्वायत्त विश्वविद्यालय कायम करने की योजना बनायी गयी थी । सन १९४७ में देश आज़ाद हुआ, साथ ही देश का दो टुकड़ों में बँटवारा हुआ ।

शिक्षा अभियान की योजना चौपट हो गई । अभियान का मुख्यालय स्थानांतरित करना पड़ा। आज-कल वह महाराष्ट्र के सुविख्यात महानगर पुणे में है । जीवन के अधुनातम और बुनियादी ज्ञान के अन्यान्य पहलुओं से छात्रों को अवगत कराने के साथ साथ अध्यात्मनिष्ठ आदर्श से अनुप्राणित महान् और प्राचीन भारतीय संस्कृति के सनातन तत्त्वों के प्रति उनके अंतरंग में जिज्ञासा और अभिरुचि जगाना मीरा शिक्षा अभियान का प्रधान उद्देश्य है । इस विराट और महान् देश की जनता के सर्वांगीण दास्य-विमोचन के लिए इस प्रकार की शिक्षा की नितांत आवश्यकता है । अतएव मीरा शिक्षा संस्थाओं की अध्यापन प्रणाली में इस बात पर बल दिया जाता है कि शिक्षा दिव्य चैतन्य की शोध-यात्रा है, और दीन-दुखियों, रोग-पीडितों, अभावग्रस्तों की सेवा समग्र ज्ञानार्जन का उद्देश्य है ।

दादाजी की अविरत, अखंड प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में पुणे में विभिन्न सेवा-कार्य जारी हैं । दो धर्मार्थ औषधालय चलाए जाते हैं जिन में प्रतिदिन सैकडों गरीब रुग्णों की निःशुल्क वैद्यकीय सहायता की जाती है । संत मीरा महाविद्यालय तथा संत मीरा प्रशालाओं में निर्धन छात्र-छात्राओं को निःशुल्क शिक्षा का प्रबंध जारी है । ‘ कल्याण निधि ’ में से देशभर के

कई जरूरतमंद, बे-सहारा व्यक्तियों की आर्थिक सहायता की जाती है । ' सेवाधाम ' में महिलाओं को अपनी आजीविका चलाने के लिए रोज़गार का मौका मिलता है। पशु-पक्षि भी मानव जाति के बांधव हैं जिन के कल्याण के कार्यकलाप जीवदया विभाग द्वारा आयोजित किए जाते हैं ।

दादाजी का जीवन सर्वस्व-समर्पण का, त्यागमय जीवन रहा । अंतिम दिन तक आप गरीबों और यतीमों की सेवा में व्यस्त रहे । दीन-दुखियों के मुख में आप प्रभु के दर्शन पाते थे । आप की निगाह में हर एक इन्सान, हर एक जीव सौंदर्य-सम्राट भगवंत की प्रतिमा था । भूख, रोग, अज्ञान से पीडित व्यक्तियों के जीवन में खुशहाली की बहार लाना आप की जिंदगी का मकसद था । पुणे में ता. १६ जनवरी १९६६ को आपने अंतिम सांस ली । आप के महानिर्वाण के पवित्र स्थान पर समाधि भवन बनाया गया है । तथा चौराहे पर दस फूट ऊंची कांस्य-मूर्ति खडी की गयी है ।

दादाजी दुख-दर्द से कराहनेवाले व्यक्तियों के दिलों का नित्य सांत्वना दिलाते रहे । ऐहिक जीवन के भीषण अरण्य में अंधेरी राह टटोलते हुए आगे बढनेवाले लोगों की मदद के लिए आप बडे प्यार के साथ आगे बढ़ते थे, ज्ञान-ज्योति जलाकर उन का मार्ग आलोकित करते थे । हृदय के अंतस्तल

के प्रेम की प्रभा आप के मुखमंडल पर झलकती थी । प्रभु के प्रति प्रगाढ भक्ति और गहन श्रद्धा से निर्मित दिव्य शांति की कांति से आप का चेहरा निखर उठता था । मानव जाति के प्रति आप के संदेश का यही सार था कि हर-एक व्यक्ति को सत्यनिष्ठ जीवन जीना चाहिए । भगवद्भक्ति एवं प्राणि-मात्र की सेवा में ऐसे जीवन का रहस्य निहित है । मनुष्य, पशु, पक्षी, सारे जीव प्रभु की संतान है ।

दादाजी की मान्यता थी कि उदात्त उद्देश्य की सिद्धि के लिए लोक-जीवन से दूर भाग कर गिरि-गव्हर या अरण्य की वृक्ष-राजी के बीच एकांत जीवन का आश्रय ढूंढ़ना उचित नहीं है । आप संन्यासमार्ग के समर्थक नहीं थे । ऐहिक जीवन में समाज के बीच रहते हुए मनुष्य को अपना उत्तरदायित्व निभाना चाहिए, नियत कर्तव्य का सुचारु रूप से पालन करना चाहिए । आप का कहना था कि मनुष्य लोक के बीच रहे परंतु लोक का न रहे । आप अकसर बता दिया करते थे कि भू-लोक पर हम मुसाफिर हैं । अद्भुत पृथ्वी-द्वीप पर हमारा निवास अल्प काल तक रहेगा । हमें अपनी सनातन, शाश्वत मातृ-भूमि में लौट जाना है । ऐहिक जीवन के शोरगुल और भ्रांति-मूलक नज़ारों की भूलभुलैया में खो जाने से हम अपने मातृ-लोक को भुला बैठे हैं । हमें अपने कदम उस मार्ग की दिशा

में मोड लेने चाहिए । परमात्मा जीवात्मा का मातृ-लोक है । इस तथ्य को हम कदापि न भूलें । हमारे चिंतन, कथन और आचार में वहाँ लौट जाने की उत्कट आकांक्षा और लगन व्याप्त होनी चाहिए । दादाजी का जीवनसंबंधी दृष्टिकोण पूर्णत: धार्मिक रहा । परंतु आप धर्म को कट्टर पंथ या संप्रदाय के रूप में स्वीकार नहीं करते थे । पुजारी, महंत, धर्म-ग्रंथ, मंदिर, तानाशाह जैसे बाह्य अधिकार के प्रति शरणागति धर्म नहीं है । धर्म करुणा और त्याग से परिपूर्ण जीवन का आदर्श प्रस्तुत करता है । वह दिव्य चैतन्य के बीच, आध्यात्मिक जीवन को सर्वोच्च मानता है ।

गरीबों को रोटी खिलाने और वस्त्र पहनाने में दादाजी खुशी महसूस करते थे । एक बार किसी रईस ने आप को नोटों का पुलिंदा दे कर कहा, "दादाजी, प्रभु का मंदिर बनवाने के लिए यह धन-राशि स्वीकार कीजिएगा ।" दादाजी ने उस रकम से गरीबों को खाना खिलाया और कहा, "भूख से तडपते हुए व्यक्ति को रोटी मिलने पर वह प्रभु की करुणा के प्रति संतोष प्रकट करता है । ऐसे व्यक्ति का हृदय प्रभु का सर्वोत्तम मंदिर है ।"

दादाजी की करुणा मानवमात्र तक ही सीमित नहीं थी । पशु पक्षी ही नही बल्कि पेड़-पौधे एवं पुष्प आप की करुणा के

विस्तार के अंतर्गत समाविष्ट रहते थे । एक बार फूल बिनने के हेतु आप बगीचे में गए । लेकिन आपने महसूस किया कि फूल अपने अपने परिवार में खुशी से रहते हैं, जिन्हें एक दूसरे से अलग करना बेरहमी है । मवेशियों से पेश आने का कसाइयों का ढंग देख कर आप को बडा दुख होता था । आप की मान्यता थी कि मानव की भांति पशु-पक्षी भी प्रभु की संतान हैं । उन्हें प्यार न करना प्रभु की भक्ति से बाज़ आना है । सारी जीवसृष्टि एक ही विशाल परिवार की सदस्य है । पशु और पक्षी मनुष्य के छोटे भाई हैं । चींटी और मक्खी तथा कीटाणुओं तक मे प्रभु का निवास है ।

'लघु मार्ग' का निर्देश दादाजी अकसर किया करते थे । लघु मार्ग पर अग्रसर होने के मानी है, धूलि-कण की भांति नम्र बनना, अहंभाव को मिटाना, तथा अहंता से पैदा होनेवाले दुष्प्रभाव से स्वयं को बचा लेना । अहंता के फलस्वरूप बडप्पन की होड पैदा होती है । प्रायः आदमी में यथार्थ में महान् होने की चाह और लगन नहीं पाई जाती । वह मात्र दिखावटी बडप्पन चाहता है । दादाजी का कहना है कि, प्रभु नहीं चाहता कि तुम उसे बड़ी कीमती और तड़क भड़क की चीजें अर्पण करो । वह भक्तिभाव का भूखा है । भक्ति से समर्पित छोटी छोटी चीजों को वह पवित्र भोग (नैवेद्य) के रूप में ग्रहण करता है ।

यद्यपि दुनिया में आजकल बडप्पन की पूजा होती है, दादाजी शांति से सब को लघु बनने के मानी बता देते हैं। उदात्तता और पावित्र्य के ऊंचे शिखर पर आरोहण करने का आप सब का आव्हान करते है, जहाँ केवल वे लोग चढ पाते हैं जिन में अपने नगण्य होने की चेतना जाग उठी है। मानव जाति भीषण संकट में से गुज़रती जा रही है। उस के सामने इतिहास की सब से बड़ी चुनौती खड़ी है। करोड़ो लोगों की जिंदगी का रंग भीषण एवं संदिग्ध भविष्य की मनहूस छांह से फक हो गया है। दुनिया खतरे और मुसीबत में से होते हुए सर्वनाश के कगार की ओर तेज़ी से बढ़ रही है। विश्व-विख्यात इतिहासविद डॉ. अर्नोल्ड टाइनबी ने लिखा है, "आजकल हमारे अज्ञात वंशज़ों का अस्तित्व ही खतरे में है। मनुष्य जाति का संभवनीय, खतरनाक हत्यारा, जानलेवा दुश्मन स्वयं मनुष्य ही है। वह कसाई नये विज्ञान से प्राप्त भीषण शस्त्र-संभार से लैस है।"

उपभोग की वस्तुओं, सुवर्ण तथा रुपये-पैसे से प्राप्त होनेवाली चीजों की प्राप्ति तथा संचय पर आजकल सर्वाधिक बल दिया जाता है। प्रायः हर एक का लक्ष्य है कम काम और भारी दाम। आत्म-सुधार की ओर शायद ही किसी का ध्यान जाता है, जब कि जीवन यापन के स्तर को ऊंचा उठाने की बात का सर्वत्र बोलबाला है। भारत के मनीषियों ने दिखा दिया है कि संसार

का नव-निर्माण किताबी प्रायोजनाओं और प्रकल्पों से संपन्न होना संभव नहीं है। नव-मानव ही नव-निर्माण के लिए अनिवार्य है। हृदय-परिवर्तन न हो पाए तो विकास की प्रायोजनाओं पर शोषणनिष्ठ, सत्तालोलुप और संचयवादी मन:प्रवृत्तियां हावी हो जाएंगी। दादाजी की दृष्टि में संस्था, संगठन, योजना, कार्यक्रम, प्रकल्प का अत्यल्प मूल्य है। जिस आदर्शनिष्ठ जीवनप्रणाली पर आप बल देते रहे उस के सूत्र संक्षेप में निम्न प्रकार हैं :

(अ) सनातन सत्य की उपासना बुनियादी बात है।

(ब) दीन-दुखियों, उत्पीडितों की सेवा के लिए जीवन समर्पण करें।

सत्यनिष्ठ जीवन के रहस्य का सार दो टूक बातों में दादाजी ने बताया है : (१) भगवन्नाम का जप, प्राणीमात्र के प्रति हमदर्दी और प्यार। पीडा से कराहते हुए दुखी मनुष्यों और पशु-पक्षियों को प्यार की आवश्यकता है। (२) कट्टर संप्रदाय परस्ती के द्वंद्वमय जीवन से बाज आ कर अद्वैतनिष्ठ, सुसंवादभरे, प्रेममय जीवन का स्वीकार। जुदाई या द्वैत-भाव विश्व-वेदना की जननी है। समग्र सृष्टि प्रेम-स्वरूप प्रभु की दिव्य ज्योति की किरनें हैं जो अंतत: उस ज्योति में समा जाएंगी।

– जे. पी. वास्वानी

※ दादाजी उवाच ※

० सब से भला काम है आत्म-विकास ।

० सेना के रण-गर्जन में या भीड़-भड़क्के के नारों के कोलाहल में स्वाधीनता से साक्षात्कार नहीं हो पाता । स्वाधीनता आध्यात्मिक जीवन में है ।

आध्यात्मिक जीवन में संभवतः दरिद्रता और कष्ट से सामना करना होगा । तथापि यह दरिद्रता समृद्धि दिलाती है और कष्ट सेवा की सामर्थ्य हो जाते हैं ।

० प्यार करना यानी क्या ?

कब्जा करना नहीं, बल्कि त्याग करना । कब्जा या संचय मनुष्य और भगवान के बीच खाई है ।

दान भगवत्सदृश बनाता है ।

० यह दुनिया तेरा घर नहीं है । तू यहां अजनबी है ।

सनातन सत्तत्व तेरा घर है ।

रेगिस्तान में फंसे हुए मुसाफिर की भांति तू यहां है ।

० कामकाज में काफ़ी व्यस्त रहने के बावजूद अगर अपने को क्रियाशून्य महसूस करो तो स्पष्ट है कि चित्त समाधि में लवलीन हुआ है । दुनिया में रहते हुए तुम अलग हो जाओगे । गतिशील रहने पर भी तुम निश्चल होगे । जीवन के संघर्ष एवं अंर्तविरोध के बीच तेरे अंतरंग में शांति बनी रहेगी ।

० किसी ने मुझ से पूछा, " क्या सब का अंत मृत्यु है ? "

मैं ने कहा, " मृत्यु नव-जागरण है । मेरी धारणा है कि आत्मा उत्क्रांति का महत्त्वपूर्ण आशय तथा मूल्य है । आत्मा सनातन परमात्मा के अनुकूल है । अत: आत्मा भू-लोक से अधिक समृद्ध पर्यावरण पाना चाहता है । "

० क्या तुम्हें देवता बनना है ? तो अपने को जीत लो ।

० सब से कीमती खज़ाना है समय । लेकिन बहुत से लोग अपने समय का अपव्यय करते हैं । वे यह नहीं सोचते कि हर एक क्षण कितना मूल्यवान है ।

समय के हर एक क्षण के बारे में सतर्क रहो । हररोज सेवा का कोई काम किया करो ।

० अकसर अपने से में पूछता हूँ :

क्या मैं ने उस आदमी को सडक पर पाया था ?

और क्या उसे गठरी ढोते हुए छोड मैं चला आया ?

जिंदगी की राह पर अपनी गठरी ढोते हुए घसीटकर चलने-वाले मुसाफिर के बोझ में हाथ बँटाओ। हाथ बँटाओ। बोझ उठा लो। दान जीवन है।

० प्रभु-कृपा जीवन की रोटी और पानी है।

उसे पाना हो तो फालतू विवादों से बाज आओ। अपने ऊपर उत्तेजनाओं और विक्षेपों को हावी होने नहीं देना। बुराई की लत और झूठमूठ के विवादों का सब से बढिया जवाब है मौन।

मौन से प्रभु-कृपा का झरना खुलता है। उस झरने का पानी सारी व्याधियों और व्यथाओं का उपशमन करता है।

० दिल के दर्द से मैं चिल्ला उठा, "इस संघर्ष और वेदना से मेरा जी ऊब उठा है। पहाड की चोटियों पर शांति है। मुझे वहाँ जाने दो।"

प्रभु ने बताया, "ध्वस्त गांवों में तथा संपत्ति के अधीन नगरों में जा कर सेवा-कार्य किया कर।"

मैं ने जवाब दिया कि "चारों ओर शोरगुल और कोलाहल है। पर्वत-शिखर पर शांति है।"

तब तुझे लगा कि मानो प्रभु रुआसा हो गया है। प्रभु ने मुझ से कहा, "पुत्र, यह सही है कि यहाँ यंत्रणा सहनी पडती है। मेरे पुत्र और कन्याएँ अंधेरे में राह टटोल रही हैं। उन्हें राह दिखा दे। अंधेरे में उन्हें रोशनी की ओर लिवा ले चल। उन्हें सेवा की आवश्यकता है।"

० होम-हवन, मंत्र-पठन, पूजा-पाठ, मंदिर-निर्माण आदि कर्मकांड फिजूल हैं। प्रभु की उपासना सेवा कार्य के रूप में करो।
अपना हरएक कर्म ईश्वर के प्रति सर्मपित पूजा-सामग्री मान कर करो। अध्यात्मनिष्ठ जीवन का यह सिद्धांत है।
धर्म न तो कोई संप्रदाय है, न कर्म-कांड, न शास्त्रवचनों का पोथा। जीवन ही धर्म है। जीवन त्याग है. यज्ञ-याग है।

० खेत, कारखाना, दफ्तर, दूकान, विद्यालय या और कहीं कोई भी तुम्हारा नियत काम-काज हो, वह दैनंदिन कार्य-कलाप प्रभु का मंदिर है, जिस में तुम ही पुजारी या महंत हो।
और पूजा-सामग्री, स्तोत्र-मंत्र, यज्ञाग्नि एवं आहुति भी स्वयं तुम ही हो।

० भगवद्-भक्ति और मानव-सेवा के कार्य में यदि संपत्ति का पर्याप्त अंश व्यय न किया जाए तो संपत्ति का वैभव भद्दा और भोंडा लगता है।

ज़रूरतमंदों को हिस्सा न देनेवाले की संपत्ति लुटेरे की जायदाद है ।

० गीता के श्लोक का पठन और कृतज्ञता से प्रभु की प्रार्थना के बाद सो जानेवाले बालक के अधर पर खिलनेवाली निरीह मुसकान की ऋजुता कैसी लुभावनी होती है ।

० भूखों को रोटी खिलानेवाला व्यक्ति भी ईश्वर की उपासना करता है । यह उपासना देह के जरिये होती है ।

० क्या तुम दुखी हो ? पशोपेश में हो ? क्या तुम्हारे दिल का दिलरुबा दुख-दर्द की रागिनी आलापता है ?

यदि हां तो मेरी बात सुनो :

धीरज से काम लो । अपने दैनंदिन काम-काज से मुंह नहीं मोडना । तुम जिस की खोज कर रहे हो उसे अरण्य में जा कर नहीं पाओगे । लोक-व्यवहार से पलायन तुम्हारे हित में नहीं है । स्वयं अपने से दूर कहाँ भाग जाओगे भला ? तुम्हें अनासक्त, निष्काम कर्म की साधना बराबर जारी रखनी होगी । और कर्म के बंधन से मुक्त होना होगा ।

० प्रभु नहीं चाहता कि तुम उसे आडंबर की, भडकीली, बड़ी बड़ी चीजें अर्पण करो । वह भक्ति-भाव से समर्पित छोटी

छोटी चीजों का पवित्र पूजा-सामग्री के रूप में सहर्ष स्वीकार करेगा ।

० ऐ मुसाफिर, प्रियतम प्रभु के मंदिर की राह चलते साथ गठरी काहे को लिए हुए हो ? हाथ खाली रहें ।

मंदिर पहुचनेपर पाओगे कि जो खाली हाथ हैं वे ही यथार्थ में समृद्ध हैं ।

० आज-कल नितांत आवश्यकता है नव-शिक्षण की । दिल को जगाना शिक्षा का उद्देश्य हो ।

जागृत हृदय दिमाग को सही राह पर चलने को प्रेरित करता है ।

दिल से दिमाग को नई रोशनी, नई दृष्टि मिलेगी । भारत विश्व के दिव्य, आध्यात्मिक नव-जागरण का अगुआ बनेगा ।

० दुनिया भर के मुल्कों के दिल अगर ज्वालामुखी पहाड हो तो शांति के सुमन कैसे खिलें ?

अंतर में झांको एवं आत्मा का चिंतन करो । शांति की राह अनायास मिलेगी ।

० यदि विकास पाना चाहते हो तो तृणवत् विनीत, वृक्षवत् सहिष्णु और डेजी की भांति अन्यतम निष्ठावान भक्त हो जाओ। (डेजी फूल नित्य सूरज की ओर मुंह फेरता है।)

० मुंह बंद रखो तो सुख पाओगे।

० किसी ने पूछा, " तुम्हारा जीवन काहे से इस कदर बढिया बना ? "

मैं ने जवाब दिया, " क्यों कि मेरा एक संगी-साथी है। "

हां, वह साथी हमेशा मेरी मुसीबतों से हिफ़ाज़त करता है। मेरी बीमारी में वह मुझे बचाता है। शुभ कामना प्रदान करता है। आधी रात के घुप अंधेरे और भीषण सन्नाटे में मुझे उस के दिव्य प्रेम की विशाल बांहों में शरण मिलती है।

वह हर किसी का साथी है। सर्वश्रेष्ठ सखा है।

उस प्रभु के प्रति अपनी निष्ठा और भक्ति को दृढ और उज्ज्वल बना लो। ता कि भीड़-भड़क्के से भरे अपने अशांत जीवन को दिव्य शांति मिले।

० जिंदगी एक तंबू है। मालिक यहाँ कुछ समय के लिए डेरा डालता है, और फिर डेरा-डंडा समेट लेता है। दुबारा और कहीं डेरा डालता है।

० भलाई बनी रहती है। यदि तुम दुर्व्यवहार करो तो वह तुम्हारा पता लगा कर ही रहेगा।

० ईश्वरेच्छा के बारे में अपनी पसंद का खयाल मत करो। उस का स्वीकार और सम्मान करो।

प्रभु द्वारा सौंपे गए भार को अपना लो।

विश्वास करो कि हर एक भार वरदान है।

० सडक पर कहीं सर्दी में ठिठुरते हुए एक निर्धन, दीन, वृद्ध के पास से एक व्यक्ति गुज़र रहा था जिस ने वृद्ध की सहायता के हेतु अपनी जेबें टटोलीं, लेकिन कुछ हाथ नहीं आया। उस व्यक्ति ने प्रभु को पुकार कर प्रार्थना की :

"प्रभो, सर्दी में ठिठुरते हुए इस गरीब बूढे को एकाध पैसा भी देने में मैं असमर्थ हूँ। उसे तेरी करुणा की आवश्यकता है।"

उस पादचारी की प्रार्थना क्या सेवाकार्य नहीं है ?

यह असंभव है कि वह प्रार्थना अनसुनी रहेगी।

० पाप एक ही है : जुदाई (द्वैतभाव)।

दुराचार एक ही है : अधिकार या बडप्पन का लालच।

परमपूर्ण तत्त्व एक ही है : जीवन एवं प्रेम-भाव का स्वामी, भगवान।

० डेज़ी की भांति ईश्वराभिमुख बनो । प्रभु की रोशनी का नित्य आकंठ पान किया करो ।

नन्हासा फूल बनो !

० मृत्यु के बाद मैं न तो स्वर्ग पाना चाहता हूँ न कोई देव-लोक ।

मेरी यह भी चाह नहीं है कि भगवान से एक-रूप हो जाऊं । नित्यनूतन, अनंत, चैतन्य में जीवन बिताऊं । और प्रभु की भक्ति एवं सेवा करूं । अपने मौन एवं कार्य के द्वारा प्रभु को ग्रहण करूं । यही मेरी कामना है ।

० तुम से बुरी तरह पेश आनेवालों की भी भलाई की शुभ कामना किया करो ।

विश्व में कर्म-विपाक का सिद्धांत जारी है । सारे कर्मों का लेखा जोखा होता है । हर एक को कर्म के अनुसार फल मिलता है ।

० इस अविश्वसनीय भूलोक की अपनी यात्रा के दौरान यदि तुम सब को उनकी त्रुटियों और अपराधों के लिए क्षमा करते हुए भलाई चाहो तो मेरा विश्वास है कि शुभ कामनाओं के भांडार से तुम्हारा जीवन समृद्ध और समुज्ज्वल बनेगा ।

० हर एक अपराधी एवं पापी संत-महात्मा के व्यक्तित्व की ऊंचाई तक उठ सकता है।

अत: किसी से नफ़रत मत करो। बल्कि सब के साथ हमदर्दी से पेश आओ।

दूसरों का सही रूप जान लेने की कुंजी है समवेदना।

० नर और नारायण एक दूसरे के सखा हैं। यह खयाल कितना प्रेरणादायी है।

हां, सत्य के महान् साहस कर्म में मनुष्य और ईश्वर साथी हैं।

मानव एवं भगवान दोनों एक ही भ्रातृ-कुल, एक ही परिवार और एक ज्योतिर्मय लोक के हैं।

० अपनी मानवता की दिव्य गरिमा के साथ खड़े हो जाओ। तुम ईश्वर-पुत्र हो !

० भगवान की भक्ति करो। भक्ति और प्रेम के रूप में जीवन की कृतार्थता प्राप्त करो।

० ईश्वर के आज्ञाकारी औजार के रूप में ईश्वर में विचरण करो। ईश्वरेच्छानुसार कर्म करो। तुम्हारा बरताव ऐसा रहे मानो लौकिक व्यवहार के प्रति तुम मृत व्यक्ति हो।

० बड़े बड़े विशाल कार्य नहीं, बल्कि छोटे काम हमारे सही व्यक्तित्व को प्रकट करते हैं। मैं बडा पांडित्यपूर्ण भाषण दे सकता हूँ, लेकिन प्रभु के सामने उस का कोई मूल्य नहीं है। छोटी बातों का बड़ा मूल्य है। छोटे छोटे शब्दों और कृतियों के द्वारा चरित्र प्रकट होता है।

० मौन रखो। तुम्हारे अंतरंग की दिव्य चिनगारियों से मशाल बनेगी, जिस की उज्ज्वल रोशनी तुम्हें प्रकाश-पुंज ईश्वर के अधिकाधिक निकट लिवा ले जाएगी।

० सुविख्यात यूनानी दार्शनिक डायोजिनस का एक किस्सा है। एकांत स्थान में वह एक बार ध्यानमग्न बैठा हुआ था। उस के एक हाथ में एक सुविख्यात बहादुर सेनानी के शरीर की हड्डी थी। दूसरे हाथ में एक भिखमंगे की हड्डी थी।

डायोजिनस ने इस बात का संकेत किया कि, मनुष्य चाहे अमीर हो या गरीब, मशहूर हो या अज्ञान, मूलतः एक ही है।

हम सभी लोग एक ही बिरादरी के हैं।

० धर्म के बारे में कम बोलो, और प्रचुर मात्रा में काम करो।

० दुश्मन को भी प्यार करो।
यद्यपि तुम्हें कांटा मान वह नफ़रत करे तो भी तुम गुलाब की भांति खिल उठोगे।

० ज्यों ज्यों प्यार बढता है, मन का प्रक्षोभ घटता है।

० योगाभ्यास करना चाहते हो ?
सुहाने, एकांत स्थान में बैठ कर मौन रखो। ध्यान करो। अपने को भूल जाओ। अनदेखे प्रभु के प्रति भक्ति में लवलीन हो जाओ।

० चरखे में निचोडने पर अंगूर से आसव निकलता है।
मनोविकार और वेदना के चरखें में निचोडने पर तेरी जिंदगी से प्रज्ञा का आसव निकलेगा।

० क्या स्वयं अपने को जानना चाहते हो ?
दूरदूर भटकने से बाज आओ। भीतर पैठ कर झांको।

० शांति पाना चाहते हो ? तो तृणवत् नम्र बनो।

० किसी प्राणी के कारण तुम्हारे अंदर क्या वासना का शोला भडक उठता है ? तो फिर सतर्क रहो। वासना मौत है।

० प्रेम से गरीबों की सेवा करनेवाला व्यक्ति धन्य है। स्वयं भगवान् उस के हृदय में गीत आलापता है।

उस के दिल में दिव्य संगीत गूंज उठता है।

० जिंदगी का सब से कीमती खज़ाना क्या है? सब के साथ शांत भाव बनाए रखनेवाला प्यारभरा दिल!

० देखो भला! दुनिया भगवान का बाग है।

सुन लो! हर एक फूल और पत्ता, हर एक पेड़-पौधा भगवद्-गीता का राग गाता है।

० सत्य स्वरूप प्रभु की भक्ति करो। तब सत्य तुम्हें प्यार करेगा।

० अपने काम-काज, सेवा, कार्य-कलाप के स्तर पर अनासक्ति का बरताव रखो।

गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा करो। लेकिन किसी के प्रति आसक्ति मत रखो।

किसी प्राणी से नहीं, बल्कि ईश्वर से जुड जाओ।

इस से तुम अंतर्दृष्टि पाओगे। और तुम्हें दिखाई देगा कि गरीब और जरूरतमंद, पशु और पक्षी, सभी सनातन प्रभु के छायारूप हैं।

० लोक-व्यवहार को छोड चले जाना नहीं । दुनिया के बीच जिंदगी बिताओ । लेकिन एक बात का ध्यान रखो । वही व्यक्ति सही माने में जिंदगी बसर करता है जो मूक भाव से अपना सब कुछ निछावर कर पाता है ।

० दुनिया में भले ही बवंडर मच जाए, तुम्हारा बाल भी बांका नहीं होगा । भगवान तुम्हारा कवच है ।

अपने दिल को प्रभु का मंदिर बनाओ । सर्मपित जीवन के रूप में प्रभु को पूजा-सामग्री अर्पण करो ।

कठोर परिश्रम करनेवाले, थके मांदे, बोझ से दबे हुए लोगों को अपनी प्यार भरी खिदमत और हमदर्दी पेश करो ।

० ध्यान से मतलब है प्रभु के सन्निध पहुँच जाने की तैयारी ।

० गहराई में प्रभु से मिलन होता है । दुर्भाग्य से हम लोग सतह पर रहते हैं। हमारे अंतरंग के गहन गह्वर में दिव्य सत्तत्त्व का विचरण जारी रहता है ।

अत: मुझे प्रति दिन मौन रखना चाहिए । और प्रभु का नाम-संकीर्तन करते हुए पुनीत सान्निध्य में आनंद प्राप्त करना चाहिए ।

० यदि सचमुच तुम हृदय से ध्यान करना चाहते हो तो निष्काम हो जाओ। तृष्णा एवं वासना को मिटा दो।

भगवद्गीता में बताया गया है कि नरक के दरवाज़े के तीन किवाड हैं: काम, क्रोध, लोभ। अत: इस दरवाज़े से मुंह मोड लो।

इन तीन मनोविकारों से वाज आओ। सारी तृष्णाओं, वासनाओं को मिटा दो, ता कि स्वर्गीय साम्राज्य के दरवाज़े की ओर तुम्हें लिवा लिया जाएगा।

० जो व्यक्ति सिर्फ अकेले अपने लिए रसोई बनाता है वह चोर है। अगर तेरे घर में किसी गरीब, भूखे-प्यासे आगंतुक को खिलाने के लिए रोटी न हो तो तुझे राहजन लुटेरे से बेहतर क्यों कहा जाए ?

यदि तू बंधु के बोझ में हाथ न बँटा ले, उस का बोझ स्वयं न उठा ले तो तू इन्सान नहीं है।

० यह नहीं कि तेरे आत्मा है, बल्कि तू स्वयं आत्मा है। बंधुवर, अपनी यथार्थ गरिमा के साथ खडा हो जा! और अपनी दिव्यता की घोषणा कर।

उद्घोषित कर कि " मैं आत्मा हूँ, और मानवीय यंत्र नहीं बनूंगा। रूढियों और संप्रदायों को मैं अपने ऊपर हावी होने

नहीं दूंगा । मैं विश्वात्मा का अंश हूँ । मैं अमृत-पुत्र हूँ । जन्मसिद्ध अधिकार के तौर पर मैं स्वाधीनता का दावा करता हूँ । ”

० सारे पाप एवं दुःख का स्रोत एक ही है । वह है, मनुष्य का अपने दिव्यत्व से इनकार तथा उसके प्रति अज्ञान । अपने जीवन के दिव्यत्व को घोषित कर मौत को जीत लो ।

देह और मन के प्रति मर मिट जाओ ! यह दोहरी मौत मौत को जीतेगी ।

अस्थि-चर्म का बलिदान देह की मौत है । अहंभाव का सफाया मन की मौत है ।

० सुकरात ने कहा था : अपने को पहचानो ।

कोई अपने को तब तक नहीं जान पाता जब तक उस के प्रति विरोध खडा नहीं होता । संघर्ष के ज़रिये ज्ञान-लाभ हो जाता है ।

विरोध और यंत्रणा का सामना करते हुए अपना धर्म पालन बराबर जारी रखो जिस से तुम अपने आंतरिक दिव्य आत्म-तत्त्व को जान लोगे ।

अपने को पहचान लेने के मानी है धर्म-पालन ।

० हृदय में हरएक प्राणी के प्रति करुणा होनी चाहिए । क्यों भला ?

मूक भाव से मेरे भीतर यह धारणा बलवती हो गयी कि हर एक गाय, कुत्ता, पक्षी, सारे जीव विश्व के संगीत स्वर-मिलाप के आलाप हैं ।

अरे घमंडी, कृष्ण अपनी बांसुरी सिर्फ तेरे लिए नहीं बल्कि सब के लिए बजाता है ।

सारे जीव दिव्य जगन्माता की संतान हैं ।

० दिखावा मत करो, बल्कि हो जाओ । दिव्य सत्तत्त्व से एकरूप होने का रहस्य है अस्तित्व-लोप । पूर्णता प्राप्त करने का मार्ग नगण्यता है ।

नगण्यता की अवस्था कैसे प्राप्त करें ? हर रोज लघु बनने की कोशिश करो । पद, प्रतिष्ठा, अधिकार को छोड दो ।

० क्या जिंदगी के सवाल की वजह से पशोपेश में पड गये हो ?

बेफिक्र रहो । मौन रखो । सवाल का हल हाथ आ जाएगा ।

तुम्हारे भीतर आत्मतत्त्व का कार्य-कलाप जारी है । चेतना-युक्त योजनाकारी, आक्रमणशील प्रज्ञा की अपेक्षा बेहतर ढंग से वह सवाल का हल ढूँढ निकालता है । शांति बनाए रखो ता कि हल पा लोगे ।

स्वयं को खोने का रहस्य अवगत करो ।

० अद्वितीय ब्रह्म की खोज करो। उस अकेले के भीतर तुम सभी कुछ पाओगे ।

कठिनाइयों से तुम नहीं घबराओगे । तुम अनुभव करोगे कि ब्रह्म के साथ चित्त लवलीन होने से तुम कदापि अकेले नहीं रहे । विश्व तुम्हारी मदद के लिए सिद्ध रहा ।

० क्या पाप तुम्हारा पीछा करता है ?

हिंमत हारना नहीं । पाप में भी पापातीत प्रभु है ।

प्रभु तुम्हारा पीछा करता है । दुराचार के प्रति आकर्षण नष्ट होगा । पाप के कीचड में चलते चलते तुम्हारा आध्यात्मिक सामर्थ्य बढेगा । आध्यात्मिक दृष्टि तेज बनेगी । तुम यह समझ लो ।

० क्या तुम्हारे पास सामर्थ्य है ? तो फिर वह भोग के लिए नहीं, बल्कि गरीब और कमज़ोर लोगों की सेवा के लिए है ।

क्या तुम्हारे पास ज्ञान का भांडार है ? तो फिर वह शेखी बधारने के लिए नहीं है, बल्कि अपने पासपडोस के लोगों में ज्ञान की रोशनी फैलाने के लिए है ।

० जो व्यक्ति आत्मा को भुलाकार जड़ वस्तुओं के भोग में मशग़ूल है, दिव्य आत्मा के मनन की जिसे फ़ुरसत नहीं है, उस से बदतर दुखांतिका क्या हो सकती है ?

० जीवन संचय के लिए नहीं, बल्कि दान के लिए है। सब को प्यार से, हाथ खोल कर, आनंद के साथ दान किया जाए ।

० गरीब को एक दाना खिलाओ तो प्रभु मनों और टनों कृपा-प्रसाद तुम्हें देगा ।

० क्या मनोविकारों से पीडित हो ?

तो फिर बस्ती से दूर खुली जगह में जा कर संतोष की सांस लो । प्रकृति के साथ घुल मिल जाओ । प्रसन्न, उल्लसित, संतुष्ट हृदय से घर लौटो ।

० अगर कालेकलूटे खयालों के हमले से परेशान हो जाओ तो खिडकी से झांक कर सितारों को देखो ।

वे देवताओं से आए हुए दीये हैं जो सब की भलाई चाहते हैं और व्याधि-निवारण करते हैं ।

० हर रोज मौन रखो और मल्लाहों के शब्दों में प्रभु की प्रार्थना किया करो । कहो : " भगवान्, मेरी नैया छोटी-सी

है, तेरा सागर विशाल है । मेरी मदद कर, ता कि बेडा पार हो जाए ।"

० दिव्य चैतन्य का साम्राज्य अंतरंग में है ।

उस से संवाद करने के लिए मौन आवश्यक है ।

० मंदिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों का सचमुच कुछ महत्त्व है ।

लेकिन भगवान् प्रशांत चैतन्य स्वरूप है, और हृदय के भीतर निवास करता है ।

उस शांति-ब्रह्म के पास पहुँच जाने के लिए तृणांकुर या उष:काल के मंद प्रकाश की भांति कोमल बनना आवश्यक है ।

० अंत:करण में भक्ति-प्रेम को संजोए हुए जो व्यक्ति नियत कामकाज करता है वह धन्य है । उस का काम बढिया, साफसुथरा होता है । क्यों कि उस में भक्तिभाव समाया हुआ होता है ।

जब वह अनाज पीसता है, यही सोचता है कि प्रियतम प्रभु उस की बनी रोटी का कौर मुँह में डाल कर शुभाशिष देगा ।

यदि वह झोंपडी बनाता है तो उस के दिल में खयाल आता है कि प्रिय भगवान् किसी दिन आ कर रहेगा और उस के प्रयास को कृतार्थ बनाएगा ।

अगर वह परम प्रिय की तसबीर से कमरे को सजाता है तो यह उम्मीद रखता है कि अपना चहैता ईश्वर दिव्य चैतन्य से कमरे की गरिमा बढाएगा ।

० अंतिम बिदाई के समय ढेरो धर्म-ग्रंथ किसी काम के नहीं हैं ।

एक आसान शब्द, सीधा सादा अक्षर उस वक्त पर्याप्त है। उसे बराबर दोहराते रहो। अंतरंग में प्रभु के पावन नाम का संकीर्तन करते रहो ।

भक्ति का राग आलापते रहो । भक्ति जीवन-रहस्य है ।

० दूसरों से बरतने का ढंग सहज, सरल, आयास-रहित रहे । उन्हें जीतने का प्रयास न किया जाए ।

किसी की निंदा या बदनामी मत करो । सीधे सादे ढंग से, मौन भाव से सब के प्रति प्यार प्रेषित करो ।

फिर किसी दिन तुम्हें प्रतीत होगा कि तुम्हारा बंधु और तुम, दोनों अभिन्न हैं ।

० वस्तुओं के संचय से सुख नहीं मिलता ।

दैनंदिन जीवन में ईश्वरेच्छा का सम्मान करने से तुम्हें सच्चा सुख मिलेगा।

यह कार्य आसान नहीं है। तपस्या करनी होगी। शूली ढो लेनी होगी। (जिस पर चढ कर जाने से हाथ धोना पडेगा।)

कष्ट झेलने से पावित्र्य प्राप्त होता है। जो व्यक्ति अपने को निर्मल, पुनीत नहीं बनाता वह सही माने में सुखी नहीं होता।

० यदि सुख पाना चाहते हो तो पहले दूसरों को सुखी बनाओ।

जो दूसरों की भलाई चाहता है वह धन्य है। जो दूसरों को पीडा देता है स्वयं उसे पीडा भुगतनी पडती है।

यह महान् सिद्धांत है।

० जागो! घमंड और अहंकार को छोड दो। गुरु के चरणों का अभिवादन करो और अंतर्जीवन के विकास की शुभाशिष पा लो।

० विनयशील बनो, ता कि तुम्हारी प्रार्थना बादलों के पर्दे को पार करती हुई प्रभु के दिव्यासन के समीप पहुँच जाएगी।

० सदा स्मरण रहे कि इंद्रियों के द्वारा प्राप्त विषय-सुख वेदना का ही अंश है । अतः जितेंद्रिय बनो !

विशेष उपलब्धि चाहते हो तो इंद्रियों को जीतो !

० दुनिया पूजा करती है वैभव की।
तुम पूजा करो गरीबी की।
प्रभु के नम्र चरण-सेवकों के दल में मिल जाओ ।
प्रभु के चरण-कमलों में आत्म-समर्पण करो ।
अध्यात्मनिष्ठा प्रभु के प्रति शरणागति है ।

० अध्यात्मनिष्ठ जीवन की कुंजी है गरीबी ।
जीने योग्य जीवन सिर्फ वही है ।
शेष सब कुछ माया है ।

० पानी से तन की और सत्यनिष्ठा से मन की सफाई होती है ।

० जीवन का सर्वश्रेष्ठ प्रयोजन है सनातन ब्रह्म ।
सनातन को समय की नाप में प्रकट करने के लिए हम यहाँ प्रस्तुत हैं ।

० सनातन को व्यक्त करो । इस कारण यह जान लो कि यद्यपि संसार क्षणभंगुर है, छाया-रूप या आभास नहीं, बल्कि अर्थपूर्ण है ।

० सनातन को काल की नाप में व्यक्त करने के लिए वासनाओं को मिटा दो ।

उदात्त उच्चाकांक्षाओं में उन का रूपांतर करो ।

० वासनाओं से दुराचार की उपज होती है ।

ऊंचा उठना चाहो तो लालसा को जीतो ।

० मनुष्य को तीर्थ-यात्री बनना था । लेकिन दुर्भाग्य से वह घुमक्कड हो गया ।

यह घुमक्कड बार बार इंद्रियों के फंदे में फँस जाता है । और विषय-भोग के प्रति आसक्त हो जाता है ।

यदि विषय-भोग के संसार से मुँह मोड कर आध्यात्मिक विश्व के पथ पर वह अग्रसर न हो जाए तो उस की मटर-गश्ती का अंत नहीं होगा ।

विषय-भोग का संसार असली सुख कदापि नहीं दिला दे सकता ।

वास्तविक आनंद अंतरंग के आत्मस्वरूप चित्तत्त्व के साथ सुसंवाद सिद्ध करने से पाया जाता है ।

० जीवन के प्रति श्रद्धा कदापि गँवाना नहीं । जीवन आनंदस्वरूप प्रभु से प्राप्त दिव्य देन है जिसे उस की उपासना में प्रयुक्त करना है ।

० तुम्हारे भीतर जो कुछ सर्वोत्तम हो उस में औरों को अंशभागी बनाओ ।

किसी दिन तुम्हारा दुनियाई मकान, यह शरीर खत्म होना लाजिमी है । लेकिन वह आध्यात्मिक प्रयोजन से बनाया गया है ।

जब और सब कुछ नष्ट हो जाएगा, जीवन के आध्यात्मिक मूल्य वने रहेंगे ।

उन में दूसरों को सहभागी बना देना । संसार में सर्वश्रेष्ठ वस्तु भक्ति-प्रेम है । अनंत चित्तत्त्व की उपासना के लिए आत्मसमर्पण ही भक्ति है । ऋषि उस चित्तत्त्व की आराधना सत्य, शिव, सुंदर की त्रिमूर्ति के रूप में करते हैं ।

० दुनिया में आग के शोले भडक उठे हैं ।
प्यार को छोड और कौन-सी ताकत उस आग को बुझा सकेगी ?

० शुद्ध, निर्मल जीवन सर्वश्रेष्ठ तीर्थ-यात्रा है ।
भग्न हृदय की सांत्वना सर्वोत्तम प्रभु-प्रार्थना है ।

० यह पृथ्वी बड़ी पवित्र है । वह जीवन-वस्त्र पुनीत है जसे तुम पहने हुए हो ।

अत: अपना शरीर निर्मल बनाए रखो । श्रीकृष्ण के मंदिर के रूप में अपने अंत:करण का सम्मान करो ।

० विशाल-काय वस्तुएँ भी तहस-नहस हो जाती हैं । बड़े बड़े विराट साम्राज्यों का पतन और नाश होता है । लेकिन नन्हे नन्हे फूल प्रतिदिन खिलते हैं और पृथ्वी के लावण्य में चार चांद लगा देते हैं ।

० ऋषि-मुनि पुरातन, अनादि, अनंत के रूप में श्रीकृष्ण की आराधना करते हैं । वह प्रभु तुलसी-दल, नन्हा-सा फूल, मिट्टी के प्याले में थोडा-सा पानी, इस से कुछ भी अधिक पूजा-सामग्री अपने भक्तों से पाना नहीं चाहता ।

लघु मार्ग के इस सिद्धांत के अनुसार अपने जीवन को नन्हा दीप बना दो । वह दीप पासपडोस के जीवों के हृदयों को आनंद और भलाई की कामना की रोशनी से आलोकित करे ।

० अपने हृदय को शांत और निर्मल बना लो । ध्यान से सुनो ।

मौन के नाद को सुनो और विनीत हो जाओ ।

कार्य-कलाप कहलानेवाले कोलाहल से मौन का सामर्थ्य अधिक है ।

मौन स्वरूप सनातन आत्म-तत्त्व से सृजनशील ऊर्जा की धारा बहती है जिस के द्वारा विश्व-निर्माण-कार्य संपन्न होता है ।

० अद्वैत और भक्ति-प्रेम, सेवा और त्याग से श्रेष्ठ धर्म मुझे अवगत नहीं है ।

संप्रदायों और धर्म-पंथों की तो भरमार है । तथापि केवल प्रेम-दृष्टि सभ्यता की रक्षा और संवर्धन कर सकेगी ।

संप्रदायों और धर्म-पंथों की संस्थापना के मानी है परमेश्वर को काट कर टुकडे बनाना ।

झगडालू दुनिया प्रेम-स्वरूप प्रभु की पूजा करने की शिक्षा कब अपनाएगी ?

० प्रभु अंधेरे में रत्नभांडार देता है । पुण्य-शीलों की अपेक्षा पापी लोग प्रेम-राज्य के निकट होते हैं ।

अत: हिंमत नहीं हारना । भक्ति-प्रेम के सिद्धांत का विश्वास करो । तुम प्रभु को पाना चाहते हो । वेदनाभरी उच्चाकांक्षाओं के कुसुमों से उस की पूजा करो ।

० विश्व असीम, अनंत, पूर्णतः खुला है । खुले विश्व में डर के लिए गुंजाइश कहाँ है ?

प्रभु तुम्हें निहारता है । बात करता है । सुनो तो । डरो मत ।

चमत्कार और वैभव से भरे इस विश्व में मृत्यु जीवन का एक चेहरा है ।

० विनीत, शालीन व्यक्ति जीवन का नंदादीप जलाता है जिस की ज्योति कदापि नहीं बुझती ।

प्रभु के राज्य में प्रवेश पाने के लिए बालक के से हो जाओ ।

प्रभु के राज्य में रहना हो तो प्यार करो,भक्ति करो । नम्रता के विना प्यार नहीं हो सकता । अवरोहण के विना आरोहण नहीं !

आत्मिक विकास और संवर्धन के लिए नम्र हो जाओ । नम्रता प्रज्ञा का मुकुट है ।

प्रेम और प्रज्ञा जुडवां सितारे हैं जो तीर्थ-यात्री के पथ को प्रकाशमान बना देते हैं ।

० तेरे भीतर सुप्त शक्तियाँ बंद पडी हैं ।

तू सनातन का अंश है ।

अतः हिंमत पस्त न होने देना । धीरज से काम लो । हार, यंत्रणा, वेदना के गर्भ से धीरज और आशा को प्राप्त करो ।

ऐ मनुष्य, तू मर्त्य नहीं है ! तू दिव्य तत्त्व है । क्यों कि तू आत्मा है ।

शाश्वत दिव्यात्मा को हरानेवाली ताकत कहाँ है ?

० हताश नहीं होना । आरोहण के मार्ग पर साधक धीरे धीरे आगे बढ़ पाता है । परंतु साधक को एक एक कदम बढ़ाते हुए वह लंबा फासला तब तक काटना होगा जब तक वह भगवत्-साक्षात्कार के शिखर पर न पहुँच जाए । छोटे छोटे प्रारंभिक कार्यों से ही बड़ी बड़ी उपलब्धियाँ सिद्ध होती हैं । एक चीनी कहावत है कि, 'हज़ार मीलों की मुसाफरी की शुरु-आत एक कदम से होती है ।' अतः खेद नहीं करना । आगे बढ़ो । बढ़े चलो ।

० भगवान, मुझे यह शुभाशिष दो कि जब मेरी मौत का क्षण आए मैं इस सुंदर विश्व को बिदाई का स्नेहपूर्ण अभिवादन करूँ और महसूस करूँ कि मृत्यु के मानी है महायात्रा के लिए प्रस्थान । अतः मुझे यह आशीर्वाद मिले कि तुम्हारी कृपा से मेरी मृत्यु सुहावनी, तीर्थयात्री की मनोभावना के साथ हो जाए ।

० जीवन दान-स्वरूप है । संविभाग का सिद्धांत आध्या-त्मिकता का मूलाधार है । तुम जितना अधिक दे दोगे उतनी

तुम्हारी अधिक आध्यात्मिक संवृद्धि होगी। कंजूसी आध्यात्मि-कता का व्यत्यास है। आध्यात्मिक मानव आदर्शभूत सज्जन है। वर्नार्ड शॉ द्वारा प्रस्तुत परिभाषा लक्षणीय है। शॉ ने कहा, व्यक्ति जितना उठा लेता है उस से अधिक यदि भीतर रख देने की नित्य कोशिश करता हो तो वही सज्जन है।

० प्रति दिन मनुष्य को अल्प समय के लिए भी क्यों न हो भगवान के साथ एकांत में रहना चाहिए।

० विचार के द्वारा नहीं बल्कि मौन में प्रभु की प्राप्ति होगी।

ज्यों ज्यों हम मौन में अधिकाधिक गहरे पैठ पाएंगे, हमारी वासनाओं का धीरे धीरे नाश होगा, शुचिता प्राप्त होगी। शरीर और मन पुनीत हो जाएंगे। प्रभु के दिव्य नाम का आस्वाद लेने पर विदित होता है कि उस की कैसी अलौकिक मधुरिमा है!

Books by Sri J. P. Vaswani
(in English)

1.	Tear-Drops (A Book of Poems)	Rs.	5/-
2.	From Hell to Heaven ..	Rs.	6/-
3.	Whispers ..	Rs.	2/-
4.	Glimpses into Great Lives ..	Rs.	3/-
5.	Education : What India Needs ..	Re.	1/-
6.	Doors of Heaven ..	Re.	0-50
7.	Feast of Love ..	Re.	0-25
8.	A Child of God ..	Re.	1/-
9.	Brother of the Broken Ones ..	Rs.	1-50
10.	Chitra Darshan (in Hindi) .. (चित्रदर्शन)	Rs.	3-00

Postage Extra

Write to :

The Manager,
MIRA PUBLICATIONS,
10, Sadhu Vaswani Road,
Near G. P. O.,
PUNE-411 001.

Books by Sri T. L. Vaswani
(in English)

1.	The Face of the Buddha	..	Rs. 5/-
2.	The Life is Endless	..	Rs. 5/-
3.	The Heart of Gita	..	Rs. 10/-
4.	Prophets and Saints	..	Rs. 2/50
5.	The Rishi	..	Rs. 15/-
6.	Awakeners of Humanity	..	Rs. 15/-
7.	The Bhagavad Gita	..	Rs. 20/-
8.	A boy in Quest of God and other Stories	..	Rs. 5/-
9.	Quest	..	Rs. 10/-

Postage Extra

Write to :

The Manager,
EAST AND WEST SERIES,
10, Sadhu Vaswani Road,
PUNE-411 001.

दादाजी श्री. टी. एल्. वास्वानी